अमूर्त कला

शोधपत्र-चित्रकला

* डॉ. राकेश कुमार सिंह

अमूर्तकला का आरम्भ सबसे पहले युरोप में हुआ। भारत में इसका आरम्भ 1910 से 'कांडिस्की' के चित्रों से माना जाता है। भारत में बहुत से कलाकारों ने 'अमूर्तन' का प्रयोग अपने चित्रों में किया। अमूर्त चित्रण भारत में एक नया दृश्टिकोण लेकर आया। अमूर्तन आज का नहीं बल्कि अतीत का विचार है परन्तु आज इसे अधिक समझा गया। 'अमूर्तन' कला की ही एक खोज है। ज्यामितिय आकारों तथा कला के मूल सिद्धान्तों एंव तत्वों को महत्व प्रदान किया गया, लेकिन कुछ अमूर्त कलाकारों ने इसके महत्व को समझ कर इसका विस्तार भी किया। कुछ अपवाद भी पनपे। फंतासियों एवं कला का अनोखा संगम रहा है। आधुनिक भारतीय कला में भी फंतासियों का वर्णन किया गया है। ये फंतासियों से लेकर प्रयोग तक की कलात्मक यात्रा संवेदना को दर्शकों तक पहुँचाएगी। समकालीन कला के विभिनन पहलुओं पर समीक्षात्मक दृश्टि पाठकों को अधिक उत्सुक करने का प्रयास है। अमूर्त कलाकारों में एक ही समझ विकसित होती है और उसी के बाद ही वे अमूर्त कला को अपनाते है। अमूर्त का आरम्भ करने वाले कलाकारों में 'कान्डिस्की' के साथ–साथ 'मोनिद्रय' का नाम लिया जाता है। भारत के कई कलाकारों ने अमूर्त कला को गम्भीरता से लेकर उस पर नए नए प्रयोग किए। उन कलाकारों में रामकुमार, विमलदास, वीरेन डे, काशीनाथ साल्वे तथा अन्य कई कलाकारों का नाम लिया जाता है।

भारत में जिन कलाकारों ने अमूर्तन को अपनाया उनके अमूर्तन में भी अन्तर नजर आता है जिसमें मोन्द्रिय के अमूर्तन ज्यामितिय है। उसके अमूर्तन का विकास हम 'ट्रिज' नामक श्रृंखला में देखते हैं। पालक्ली के अमूर्त चित्रण में उसको गहरी कलात्मक समझ तथा रंगों का उचित प्रयोग होता है। 'अमूर्त कला' कलात्मक तत्वों में सौन्दर्य देखने की एक प्रारम्भिक प्रक्रिया है। अमूर्तन के बारे में सभी जानते हैं परन्तु सही समझ न होने के कारण वह सौन्दर्य को समझने में परेशानी अनुभव करते हैं। लोग अमूर्तन को आधुनिक कला समझने लगे।

कला के क्षेत्र में भारत में एक बार मूर्त चित्रण के साथ साथ अमूर्तन की भी लहर आई। इस लहर की आधार भूमि पाश्चात्य देशों में तैयार हुई। भारत में जब यह लहर आई तो बहुत से कलाकारों ने इसे अपनाया। परन्तु यह लहर बहुत अधिक दिनों तक नहीं टिक सकी फिर से उसी मूर्त चित्रण का आगमन हुआ क्यों कि चाहे कुछ भी हो चित्रों मे से आकार कभी खत्म नही हो सकते। मूर्त चित्रण का प्रयोग हर चित्रकार अपने चित्रों में करता है। अमूर्त चित्रण में भी प्रकृति की ही वस्तुएं आती है। अमूर्त का आधार भूमि यही जगत है वह भी प्रकृति से अलग नहीं। उसे इस प्रकृति के अन्दर जो कुछ भी दिखता है वह उसे अपने ढंग से अमूर्त चित्रण के अन्तर्गत प्रयोग करता है।

अमूर्त चित्रण के द्वारा चित्रकार मन में आई कल्पनाएँ भावनाएँ तथा सोच को व्यक्त करता है ठीक उसी प्रकार मूर्त चित्रण जो है वह अमूर्त चित्रण के अंतर्गत आई हुई सभी बातों को व्यक्त करता है तथा मूर्त चित्रकार अमूर्त चित्रण के अन्तर्गत आई हुई सभी बातों को ध्यान में रखते हुए चित्रण में जो रूप बनाया है उसके बारे में चित्रकार की क्या सोच, भावना तथा विचार है इन सभी बातों पर दबाव देने के कारण बाकी सभी तत्व पीछे रह जाते हैं। उस कलाकृति में अन्य तत्वों पर इतना अधिक ध्यान नहीं दिया जाता जितना कि उसके अन्दर बनाए हुए रूप पर कहने से तात्पर्य यह है कि मूर्त चित्रण में मूड के बारें मे चित्रकार जो सोचता है वह आसानी से समझ में आ जाता है। उसे अधिक बताने की आवश्यकता नहीं होती। हमने यह कभी नहीं सोचा कि कला में ऐसा चित्रण क्यों हो रहा है। मनुष्य के मूर्त चित्रण की धारा कभी न टूटती यदि पश्चिमी देश उन्हें अमूर्तन की ओर न ले जाते। पश्चिम के देशों में अमूर्त चित्रण की एक गम्भीर पृष्ठभूमि तैयार हुई और फिर अन्य देशों में उसका प्रभाव फैला। अमूर्त चित्रण के भारत में अच्छे या बुरे दोनों परिणाम आए। इसके अंतर्गत कलाकारों का एक ऐसा वर्ग बना जो अमूर्त चित्रण को भविष्य की तथा मूर्त चित्रण को अतीत की कला समझता था उसका यह सोचना बिल्कुल गलत है। रूप कभी भी नहीं मर सकता जब तक मानव का अस्तित्व हैं तब तक रूपों की रचना होती रहेगी क्यों कि जब मानव कलाकृति करता रहेगा उसके चित्रों में रूप का प्रयोग होता रहेगा। चित्रकारों ने

* ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र [हरियाणा]

आकृति मूलक और अमूर्त कला दोनों में बहुत अच्छा कार्य किया है और बहुत खराब भी। बहुत से लोग कहते हैं अमूर्त कला बहुत आसान है क्योंकि उन्हें उसमे कुछ भी समझ में नहीं आता है। उन्हें लगता है कि उसे कोई भी कर सकता है। परन्तु जब उन्हें उनका मतलब पता चलता है तो अमूर्त कला बहुत मुश्किल लगती है। कुछ कलाकार ही मूर्त और अमूर्त कला को बहुत ऊंचा पहुँचाने की क्षमता रखते हैं। भारत मे मूर्त चित्रण की एक अलग परम्परा रहीं है। बंगाल में बहुत से कलाकार पूरी लगन से आकृतिमूलक रचनाएँ करते रहे। यद्यपि नंदलाल बोस एवं उनके समकालीन कलाकारों के सामने अमूर्तन का कोई खतरा नहीं था न ही वे अत्याधिक पाश्चात्य प्रेमी रहे हैं। यामिनी राय से लेकर विकास भट्टाचार्य, संजय भट्टाचार्य, सुनीलदास तथा दिल्ली के युवा कलाकार विजेन्द्र शर्मा एवं परेश मैती जैसे कलाकारों ने अपनी भौली, तकनीक एवं आकृतिमूलक रचनाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है।

कला जगत में अमूर्त कलाकारों की अपेक्षा मूर्त कलाकार अधिक पहचाने जाते हैं। ए. एस. रमन लिखते हैं–अमूर्तता ज्यादा समय तक न ही टिक सकती बल्कि आकृति सदा बनी रहती है। इसमें हमें असफलता बहुत कम मिलती है। इसमें असफलता सिर्फ तभी मिलती है जब हम अतीत की किसी कृति को नकल करने का जो प्रयास करते हैं जो कभी सम्भव ही नहीं हो सकता। मूर्त कला कभी नहीं मर सकती क्योंकि उसकी कोई सीमा नहीं है। अमृता भोरगिल ने मूर्त चित्रण मे तैल रंगों के प्रयोग से कला को एक नई गति प्रदान की। बंगाल के कलाकारों ने तैल रंगों को काफी समय बाद अपनाया। अब चाहे मूर्त कला हो या अमूर्त कला, कलाकार रूप और आकार को रेखा और रंग को लेकर बाकी दिए हुए स्थान में सामंजस्य और संतुलन के साथ बनाना चाहते हैं। अगर दर्शक को ये बात समझ में आ जाती है तो वे मूर्त और अमूर्त दोनों को आसानी से समझ सकते हैं। एक कला कृति को समझने के लिए यह जरूरी नहीं है कि इसमें जो रूप है उसके बारे में देखने वालों को जानकारी हो क्योंकि बिना जानकारी के भी वो इस कलाकृति को समझ सकते हैं।